ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)73-74

©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

राकेश नारायण बंजारे
खरसिया

Corresponding Author :
राकेश नारायण बंजारे
खरसिया

रियल हीरोज़ : जिनकी प्रेरणा सदैव प्रासंगिक हैं

आज के दौर में अगर किसी सार्वजनिक स्थल पर देशभक्ति, देशसेवा, महापुरुषों की गौरवगाथा या राष्ट्रीय एकता, अखंडता और विश्व बंधुत्व पर चर्चा की जाए, तो आपको अनायास ही कुछ विशेषणों से नवाजा जा सकता है। इनमें 'पागल', 'जोजवा', 'फुरसतिया' जैसे फालतू संबोधन के अलावा कुछ लोग आपको 'नेता', 'भावी राजनीतिक प्रत्याशी' या 'लोगों को बरगलाने वाला धोखेबाज' तक कह सकते हैं। इन बातों में उनका कोई दोष नहीं है और न ही आपका। वास्तव में स्वतंत्रता के बाद हमने उन बुनियादी बातों को पीछे छोड़ दिया है जिनकी वजह से हमें यह आज़ादी मिली।

हम जिस भोगवादी संस्कृति को बढ़ावा देने लगे हैं उसके परिणामस्वरूप हमने उन ऐतिहासिक और गौरवशाली तथ्यों को भुला दिया है जो हमारी राष्ट्रीय पहचान की नींव हैं। यह सच है कि आज़ादी जिनके कारण मिली और जिन परिस्थितियों में मिली, वह सब बातें हमें अब धुंधली लगने लगी हैं। हमने उन बातों को भुला दिया है जो हमारी मुख्य बुनियाद हैं। जिस ईंट, कंकड़-पत्थर और सीमेंट से यह इमारत खड़ी हुई है उसकी नींव की ओर से हमने आँखें फेर लीं। पीढ़ियाँ उस भव्य आलीशान महल के ऊपर नृत्य तो कर रही हैं लेकिन इसकी मजबूती के लिए बात करने की न तो उनके पास फुर्सत है और न ही उनके आसपास ऐसा कोई उदाहरण दिखाई देता है।

जब महात्मा गांधी ने एक आह्वान किया तो मातृशक्तियाँ अपने गहने-जेवर उतारकर स्वतंत्रता संग्राम के लिए अर्पित कर देती थीं। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की हुंकार, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा," ने सैकड़ों नौजवानों के दिलों में जोश भर दिया था। भगत सिंह जैसे नौजवान, जिनके मन-वचन-कर्म में मातृभूमि की सेवा का संकल्प कूट-कूट कर भरा हुआ था, अपने प्राणों की आहुति देने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। ऐसे महापुरुषों की यादें हमें प्रेरित करती हैं, लेकिन क्या हमने उनकी विरासत को संभालकर रखा है?

याद करें महान क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खाँ - क्या आपको पता है कि अशफाक उल्ला खाँ को किस बात का गम था? उन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल से कहा था, "आप तो मातृभूमि की सेवा के लिए पुनः जन्म ले लेंगे, लेकिन मेरे धर्म में तो पुनर्जन्म नहीं होता। मैं मरने के बाद फिर से कैसे अपनी मातृभूमि की सेवा कर पाऊंगा?" उनके इस कथन में निहित गहरा दर्द और त्याग की भावना आज भी हमें झकझोर देती है। वे इस बात से दुखी थे कि वे केवल एक बार ही देश के लिए कुर्बान हो रहे थे।

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ की संस्कृति में अनेकता में एकता की झलक हमेशा से रही है। सेल्युलर जेल की छोटी दीवारों के बीच जिन वीर देशभक्तों ने अपने जीवन के सुनहरे साल बिताए, उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि वे अपनी व्यक्तिगत संपत्ति या सुख-सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने पूरे देश को अपना परिवार माना और इस उद्देश्य के लिए अपने प्राणों की आहुति दी कि आने वाली पीढ़ियाँ स्वतंत्र और गर्वित जीवन जी सकें।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमने अपने अधिकारों के लिए तो खूब संघर्ष किया लेकिन अपने कर्तव्यों को भूल गए। भारतीय संविधान में ग्यारह मौलिक कर्तव्यों में से एक यह भी कहता है कि हमें स्वतंत्रता संग्राम में कुर्बानी देने वाले महापुरुषों की यादों को सदैव हृदय मे संजोए रखना चाहिए। उनके सपनों का भारत बनाने के लिए हमें आगे बढ़ना चाहिए, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति के गरिमा की गारंटी हो और जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्रीयता के नाम पर भेदभाव न हो।

आज महापुरुषों की यादों के नाम पर कुछ चौक-चौराहों का नामकरण हो जाता है, ग्रेनाइट की कुछ मूर्तियाँ लग जाती हैं और विशेष अवसरों पर फूल-मालाएँ अर्पित कर दी जाती हैं। लेकिन क्या यह पर्याप्त है? क्या हम अपनी पीढ़ियों को महापुरुषों के विचारों को आत्मसात करने और उनके दिखाए रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित कर पा रहे हैं? शायद नहीं। क्योंकि वह रास्ता आत्म-संवर्धन का नहीं बल्कि त्याग और सेवा का है।

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ 'रील हीरो' समाज के नायक बन गए हैं जबकि 'रियल हीरो' कहीं न कहीं पीछे छूट गए हैं। हमें यह सोचना होगा कि कैसे हम उन रियल हीरोज़ को फिर से समाज के केंद्र में ला सकते हैं जो वास्तव में हमारे आदर्श होने चाहिए। हमें एक ऐसा समाज बनाना होगा जहाँ महापुरुषों के विचार और उनके बलिदान हमेशा प्रासंगिक रहें।

आज के युवाओं को देशसेवा की भावना से प्रेरित करने के लिए हमें अपने महापुरुषों की विरासत को फिर से जीवित करना होगा। उनकी कहानियों को नई पीढ़ी के लिए प्रासंगिक बनाना होगा। यह हमारे लिए केवल एक दिन की बात नहीं होनी चाहिए बल्कि यह भावना हमारे जीवन के हर पल में जीवित रहनी चाहिए।

महान स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई और कोटिश शुभकामनाएँ।

●